पल्लीवालगच्छ का इतिहास

डॉ. शिवप्रसाद...

निर्ग्रन्थ परम्परा के श्वेताम्बर आम्नाय में चन्द्रकुल से समय-समय पर अस्तित्व में आए विभिन्न गच्छों में पल्लीवालगच्छ भी एक है।[१] जैसा कि इसके अभिधान से स्पष्ट होता है वर्तमान राजस्थान प्रान्त में अवस्थित पाली (प्राचीन पल्ली) नामक स्थान से यह गच्छ अस्तित्व में आया। इस गच्छ में महेश्वरसूरि प्रथम अभयदेवसूरि, महेश्वरसूरि द्वितीय, नन्नसूरि, अजितदेवसूरि, हीरानंदसूरि आदि कई रचनाकार हो चुके हैं। इस गच्छ से संबद्ध अभिलेखीय साक्ष्य भी मिलते हैं, जो वि.सं. १२५७ से लेकर वि.सं. १९८१ तक के हैं। इस गच्छ की दो पट्टावलियां भी मिलती हैं, जो सद्भाग्य से प्रकाशित है[२]। इस निबंध में उक्त सभी साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के इतिहास पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। अध्ययन की सुविधा के लिए सर्वप्रथम पट्टावलियों, तत्पश्चात् ग्रन्थ प्रशस्तियों और अन्त में अभिलेखीय साक्ष्यों का विवरण एवं इन सभी का विवेचन किया गया है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है पल्लीवालगच्छ की आज दो पट्टावलियाँ मिलती हैं । प्रथम पट्टावली वि.सं. १६७५ के पश्चात् रची गई है। इसमें उल्लिखित गुरु-परंपरा इस प्रकार है--

महावीर
।
सुधर्मा
।
।
।
।
।
दिनेश्वरसूरि
। (पाली में ब्राह्मणों को जैन धर्म में दीक्षित किया)
महेश्वरसूरि (वि.सं. ११५० में स्वर्गस्थ)
।
देवसूरि
।
मानदेवसूरि
।
कर्णसूरि
।
विष्णुसूरि
।
आम्रदेवसूरि
।
सोमतिलकसूरि
।
भीमदेवसूरि
।
विमलसूरि
।
नरोत्तमसूरि
।
स्वातिसूरि
।
हेमसूरि
।
हर्षसूरि
।
भट्टारक कमलचन्द्र
।
गुणमाणिक्यसूरि
।
सुन्दरचन्द्रसूरि(वि.सं. १६७५ में स्वर्गस्थ)
।
प्रभुचन्द्रसूरि (वर्तमान)

पल्लीवालगच्छ की द्वितीय पट्टावली वि.सं. १७२८ में रची गई है। इसमें भगवान महावीर के ८ वें पट्टधर स्थूलिभद्र से लेकर ३६१ वें पट्टधर उद्योतनसूरि तक का विवरण दिया गया है, जो इस प्रकार है--

महावीर
।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुधर्मा
|
८. स्थूलिभद्र
|
९. सुहस्तिसूरि
|
१०. इन्द्रदिन्न सूरि
|
११. आर्यदिन्नसूरि
|
१२. सिंहगिरि
|
१३. वज्रस्वामी
|
१४. वज्रसेन
|
१५. चन्द्रसूरि
|
१६. शांतिसूरि
|
१७. यशोदेवसूरि
|
१८. नन्नसूरि
|
१९. उद्योतनसूरि
|
२०. महेश्वरसूरि
|
२१. अभयदेवसूरि
|
२२. आमदेवसूरि
|
२९. नन्दसूरि (वि.सं.१०९८ में स्वर्गस्थ)
|
४०. उद्योतनसूरि (वि.सं. ११२३ में स्वर्गस्थ)
|
४१. महेश्वरसूरि (वि.सं. ११४५ में स्वर्गस्थ)
|
४२. अभयदेवसूरि (वि.सं. ११६९ में स्वर्गस्थ)
|
४३. आमदेवसूरि (वि.सं. ११९९ में स्वर्गस्थ)
|
४४. शांतिसूरि (वि.सं. १२२४ में स्वर्गस्थ)
|
४५. यशोदेवसूरि (वि.सं. १२३४ में स्वर्गस्थ)
|
४६. नन्नसूरि (वि.सं. १२३९ में स्वर्गस्थ)
|
४७. उद्योतनसूरि (वि.सं. १२४३ में स्वर्गस्थ)
|
४८. महेश्वरसूरि (वि.सं. १२७४ में स्वर्गस्थ)
|
४९. अभयदेवसूरि (वि.सं. १३२१ में स्वर्गस्थ)
|
५०. आमदेवसूरि (वि.सं. १३७४ में स्वर्गस्थ)
|
५१. शांतिसूरि (वि.सं. १४४८ में स्वर्गस्थ)
|
५२. यशोदेवसूरि (वि.सं. १४८८ में स्वर्गस्थ)
|
५३. नन्नसूरि (वि.सं. १५३२ में स्वर्गस्थ)
|
५४. उद्योतनसूरि (वि.सं. १५७२ में स्वर्गस्थ)
|

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५५. महेश्वरसूरि (वि.सं. १५९९ में स्वर्गस्थ)
|
५६. अभयदेवसूरि (वि.सं. १५९५ में स्वर्गस्थ)
|
५७. आमदेवसूरि (वि.सं. १६३४ में स्वर्गस्थ)
|
५८. शांतिसूरि (वि.सं. १६६१ में स्वर्गस्थ)
|
५९. यशोदेवसूरि (वि.सं. १६९२ में स्वर्गस्थ)
|
६०. नन्नसूरि (वि.सं. १७१८ में स्वर्गस्थ)
|
६१. उद्योतनसूरि (वि.सं. १७३७ में स्वर्गस्थ)

इस पट्टावली में ४१ वें पट्टधर महेश्वरसूरि के वि.सं. ११४५ में निधन होने की बात कही गई है। प्रथम पट्टावली में भी महेश्वरसूरि का नाम मिलता है और वि.सं. ११५० में उनके निधन होने की बात कही गई है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि महेश्वरसूरि इस गच्छ के प्रभावक आचार्य थे। इसी कारण दोनों पट्टावलियों में न केवल इनका नाम मिलता है, बल्कि इन्हें समसामयिक भी बतलाया गया है।

पल्लीवालगच्छ का उल्लेख करने वाला महत्वपूर्ण साक्ष्य है महेश्वरसूरि द्वारा रचित कालकाचार्यकथा की वि.सं. १३६५ में लिखी गई प्रति की दाताप्रशस्ति[३], जो इस प्रकार है-

इति श्रीपल्लीवालगच्छे श्री महेश्वरसूरिभिर्विरचिता कालिकाचार्यकथासमाप्त।।

श्रीमालवंशोऽस्ति विशालकीर्तिः श्रीशांतिसूरिप्रतिबोधित डीडाकाख्यः।
श्रीविक्रमाद्वेदनभर्महर्षिवत्सरैः (?) श्री आदिचैत्यकारापित नवहरे च।।१।।

स्वश्रेयसे कारितकल्पपुस्तिका ...पुण्योदयरत्नभूमिः।
श्रीपल्लिगच्छे स्वगुणौकधाम्ना वाचिता श्रीमहेश्वरसूरिभिः।।१०।।

नृपविक्रमकालातीत सं. १३६५ वर्षेभाद्रपदवदौ नवम्यां तिथौ सीमेदपाटमंडले वऊणाग्रामे कल्पपुस्तिका लिखिता।।छ।।

उदकानल चौरेभ्यः मूषकेभ्यस्तथैव च।
रक्षणीया प्रयत्नेन यत कष्टेन लिख्यते।।१।।

संवत् १३७८ वर्ष भाद्रपद सुदि ४ श्रावकमोल्हासुतेन भार्याउदयसिरिसमन्वितेन पुत्रसोमा-लाखा-खेतासहितेन श्रावकऊदाकेन श्रीकल्पपुस्तिकां गृहीत्वा श्री अभयदेवसूरीणां समर्पिता वाचिता च।

इस प्रशस्ति में रचनाकार ने यद्यपि अपनी गुरु-परंपरा, रचनाकाल आदि का कोई निर्देश नहीं किया है, फिर भी पल्लीवालगच्छ से संबद्ध सबसे प्राचीन साक्ष्य होने इसे अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है।

इस प्रशस्ति के अंत में वि.सं. १३७८ में किन्हीं अभयदेवसूरि को पुस्तक समर्पण की बात कही गई है।ये अभयदेवसूरि कौन थे। महेश्वरसूरि से उनका क्या संबंध था, इस बारे में उक्त प्रशस्ति से कोई सूचना प्राप्त नहीं होती। पल्लीवालगच्छ की द्वितीय पट्टावली[४] में हम देख चुके हैं कि महेश्वरसूरि के पट्टधर के रूप में अभयदेवसूरि का नाम आता है। इस आधार पर इस प्रशस्ति में उल्लिखित अभयदेवसूरि महेश्वरसूरि के शिष्य सिद्ध होते हैं।

पल्लीवालगच्छ से संबद्ध अगला साहित्यिक साक्ष्य है वि.सं. १५४४/ई. स. १४८८ में नन्नसूरि द्वारा रचित सीमंधरजिनस्तवन[५]। यह ३५ गाथाओं में रचित एक लघुकृति है। नन्नसूरि के गुरु कौन थे, इस बारे में उक्त प्रशस्ति से कोई सूचना प्राप्त नहीं होती।

वि.सं. १५७३/ई. स. १५१९ में प्राकृत भाषा में ८८ गाथाओं में रचीं गई **विचारसारप्रकरण** की प्रशस्ति[६] से ज्ञात होता है कि इसके रचनाकार महेश्वरसूरि द्वितीय भी पल्लीवालगच्छ के थे। उपासकदशाङ्ग और आचारांग की वि.सं. १५९१/ई. १५३५ में लिखी गई प्रति की पुष्पिकाओं में भी पल्लीवालगच्छ के नायक के रूप में महेश्वरसूरि का नाम मिलता है।[७]

वि.सं. की १७वीं शताब्दी के प्रथम चरण में पल्लीवालगच्छ में अजितदेवसूरि नामक एक प्रसिद्ध रचनाकार हो चुके हैं। इनके द्वारा रचित कई कृतियाँ मिलती हैं[८], जो इस प्रकार हैं--

१. कल्पसिद्धान्तदीपिका
२. पिण्डविशुद्धिदीपिका (वि.सं. १६२७)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. उत्तराध्ययनसूत्रबालावबोध (वि.सं. १६२९)
४. आचारांगदीपिका
५. आराधना JRK. P-३१
६. जीवशिखामणाविधि
७. चन्दनबालाबेलि
८. चौबीस जिनावली

कल्पसिद्धान्तदीपिका की प्रशस्ति में इन्होंने स्वयं को महेश्वरसूरि का शिष्य कहा है[१]--

इतिश्री चंद्रगच्छांभोजदिनमणीनां श्रीमहेश्वरसूरिसर्व्वसूरिशिरोमणीनां पट्टे श्रीअजितदेवसूरिणा विरचिता श्रीकल्पसिद्धान्तदीपिका समाप्ता।

अजितदेवसूरि के शिष्य हीरानन्दसूरि हुए जिनके द्वारा रचित **चौबोलीचौपाई** नामक कृति प्राप्त होती है[१०]। इसकी प्रशस्ति में इन्होंने अपने गुरु-प्रगुरु आदि का उल्लेख किया है।

पालीवाल विरुदे प्रसिद्ध, चंद्रगच्छ सुपहाण।
सूरि महेसर पाटधर, तेजै दीपइ भाण ।।७।।
तासु पसायै हर्षधर, पभणै हीराणंद ।।८।।

चौबोली चौपाई की वि.सं. १७७० में लिखी गई एक प्रति जिनकृपाचन्द्रसूरि ज्ञान भण्डार बीकानेर में संरक्षित है।

पल्लीवालगच्छ से संबद्ध पर्याप्त संख्या में अभिलेखीय साक्ष्य प्राप्त होते हैं, जो वि.सं. १२६१ से लेकर वि.सं. १६८१ तक के हैं। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है--

क्रमांक	वि.सं.	तिथि/मिति	आचार्य या मुनि का नाम	प्रतिमा-लेख/ शिलालेख	प्रतिष्ठास्थान	सन्दर्भ ग्रन्थ
१.	१२५७	-	-	प्रतिमा लेख	-	मुनि कांतिसागर, संपा. शत्रुञ्जयवैभव, लेखांक ११
२.	१३४३	माघ सुदि १२	-	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	शीतलनाथ जिनालय, कुम्भारवाडो, खंभात	मुनि बुद्धिसागरसूरि, संपा. जैन धातु प्रतिमा लेख संग्रह भाग-२, लेखांक ६५५
३.	१३४५	माघ सुदि १२ रविवार	महेश्वरसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	चिंतामणिजी का मंदिर, बीकानेर	श्री अगरचंद नाहटा, संपा. बीकानेर जैन लेख संग्रह, लेखांक २००
४.	१३४५	"	"	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	केशरिया जी का मंदिर, देशनोक, बीकानेर	वही, लेखांक २२४
५.	१३६१	आषाढ सुदि ३	"	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	चिंतामणिजीका मंदिर, बीकानेर	वही, लेखांक २२७
६.	१३७३	वैशाखसुदि १२	गुणाकरसूरि	"	जैन मंदिर, आर्वी	मुनि कांतिसागर, संपा. जैन धातुप्रतिमा लेख संग्रह, लेखांक २७
७.	१३८३	माघ सुदि १० सोमवार	महेश्वरसूरि के पट्टधर अभयदेवसूरि	"	शांतिनाथ जिना. भोंयरापाडो खंभात	लेखांक २७ मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ८९९
८.	१४०९	फाल्गुन सुदि ११ गुरुवार	अभयदेवसूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	चिंतामणिजी का मंदिर, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ४२४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९.	१४३५	फाल्गुन सुदि २ शुक्रवार	अभयदेवसूरि के पट्टधर आमदेवसूरि	चंद्रप्रभ की प्रतिमाका लेख	आदिनाथ जिनालय, मालपुरा	विनयसागर, संपा. प्रतिष्ठालेखसंग्रह, लेखांक १६२
१०.	१४५३	वैशाख सुदि २	शांतिसूरि	पार्श्वनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, किशनगढ़	वहीं, लेखांक १७७
११.	१४५६	माघ सुदि १३ शनिवार	"	"	वासुपूज्य जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३९०
१२.	१४५८	फाल्गुन वदि १ शुक्रवार	"	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	आदिनाथ जिनालय, हीरावाडी, नागौर	विनयसागर, पूर्वोक्त, लेखांक १८३, एवं पूरनचंद नाहर, संपा., जैन लेख संग्रह, भाग-२, लेखांक १२३७
१३.	१४८२	—	यशोदेवसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	बावन जिनालय, करेड़ा	पूरनचंदनाहर, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखांक १९३१
१४.	१४८५	मार्ग शीर्ष वदि २	"	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३१७
१५.	१४८६	माघ सुदि ५ गुरुवार	यशोदेवसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, रतलाम	विनयसागर, पूर्वोक्त, लेखांक २६२
१६.	१४८६	माघ सुदि ११ शनिवार	"	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, सांगानेर	वही, लेखांक २६१
१७.	१४९३	माघ सुदि.....	हरिभद्रसूरि	—	विजयगच्छीय जिनालय, जयपुर	वही, लेखांक २९७
१८.	१४९३	वैशाख सुदि ३	यशोदेवसूरि	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	चिंतामणिजी का मंदिर,बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक ७६७
१९.	१४९७	ज्येष्ठ सुदि ३ सोमवार	"	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	"	वही, लेखांक ७९५
२०.	१५०१	ज्येष्ठ वदि १२	शांतिनाथ के पट्टधर यशोदेवसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमाका लेख	सुमतिनाथ मुख्य बावन जिनालय, मातर	बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक ४८५
२१.	१५०१	कार्तिक सुदि १५	"	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, भिंडी बाजार, मुंबई	मुनि कांतिसागर, संपा. जैन धातु प्रतिमा का लेख लेखांक ९५
२२.	१५०३	आषाढ़ सुदि गुरुवार	"	संभवनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, बीकानेर	नाहटा,पूर्वोक्त, लेखांक १२७६
२३.	१५०३	तिथिविहीन	यशोदेवसूरि	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	अनुपूर्ति लेख, आबू	मुनि जयंत विजय, संपा. अर्बुद प्राचीन, जैन लेख संदोह लेखांक ६३६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४.	१५०४	वैशाख सुदि ६	नन्नाचार्य संतानीय शांतिनाथ के पट्टधर यशोदेवसूरि के पट्टधर नन्नसूरि के पट्टधर उद्योतनसूरि..... के पट्टधर शांतिसूरि के पट्टधर यशोदेवसूरि	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	नाकोड़ा तीर्थ	विनयसागर, लेखक - श्री नाकोड़ा तीर्थ लेखांक १९
२५.	१५०७	फाल्गुन वदि ३	यशोदेवसूरि	नमिनाथ की धातु की प्रतिमा का लेख	सीमंधर स्वामी का मंदिर, तालाबवाला पोल, सूरत	विजयधर्मसूरि, संपा. प्राचीन लेख संग्रह, लेखांक २२९
२६.	१५०८	वैशाख वदि २	"	सुमतिनाथ की प्रतिमा का लेख	धर्मनाथ जिनालय, खजवाना	विनयसागर, संपा. प्रतिष्ठा लेख संग्रह, लेखांक ४३०
२७.	१५१०	—	नन्नसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	मुनिसुव्रत जिनालय, मालपुरा	वही, लेखांक ४७०
२८.	१५१३	माघ.....	यशोदेवसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, नाकोड़ा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखांक १८८७
२९.	१५२८	वैशाख सुदि ५	श्री रत्नसूरि	संभवनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	कुन्थुनाथ जिनालय, राधनपुर	मुनि विशालविजय, संपा. प्रतिमा लेख संग्रह, लेखांक २५८
३०.	१५२८	माघ वदि ५	यशोदेवसूरि के पट्टधर नन्नसूरि	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	घरदेवासर, बडोदरा	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त भाग-२, लेखांक २२८
३१.	१५२८	—	"	मुनिसुव्रत की धातु की प्रतिमा का लेख	जैन मंदिर, खंडप, मारवाड	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखांक २१११
३२.	१५३०	वैशाख सुदि ९	"	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, सांभर	विनयसागर, संपा. प्रतिष्ठालेखसंग्रह, लेखांक ७२०
३३.	१५३३	ज्येष्ठ सुदि ५ शुक्रवार	उद्योतनसूरि	धर्मनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, बूंदी	वही, लेखांक ७५९
३४.	१५३६	वैशाख.....९ गुरुवार	"	सुविधिनाथ की प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, नापासर	नाहटा, पूर्वोक्त लेखांक २३३३
३५.	१५३६	वैशाख...९ सोमवार	नन्नसूरि के पट्टधर उद्योतनसूरि	चंद्रप्रभ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, वोहारनटोला, लखनऊ	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखांक १५५५
३६.	१५३६	आषाढ़ सुदि ६ शुक्रवार	अजूण (उद्योतन) सूरि	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	बालाबसही, शत्रुंजय	शत्रुंजयवैभव, लेखांक २१८
३७.	१५३६	आषाढ़ सुदि ९	"	संभवनाथ की धातु की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	स्वामीजी का मंदिर, रोशन मुहल्ला, आगरा	नाहर, पूर्वोक्त, भाग-२ लेखांक १४६२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३८.	१५३७	ज्येष्ठ वदि ४ सोमवार	"	पार्श्वनाथ की सपरिकर प्रतिमा का लेख	आदिनाथ की छत्री के बाहर आले में सपरिकर मूर्ति, नाकोड़ा तीर्थ	श्री नाकोडा तीर्थ लेखांक ५७
३९.	१५४०	आषाढ वदि १	"	आदिनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ देरासर, सरधना	विनयसागर, प्रतिष्ठा लेख संग्रह लेखांक ८२३
४०.	१५५०	फाल्गुन सुदि ११ गुरुवार	"	धर्मनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा का लेख	शांतिनाथ जिनालय, नाकोड़ा तीर्थ	श्री नाकोड़ा तीर्थ, लेखांक ५९
४१.	१५५१	पौष सुदि १०	"	नमिनाथ की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिना., सवाई माधोपुर	प्रतिष्ठा लेख संग्रह लेखांक ८६३
४२.	१५५६	पौष सुदि १५ सोमवार	"	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, डांगों में, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १५३७
४३.	१५५८	चैत्र वदि १३ सोमवार	नन्नसूरि के पट्टधर उद्योतनसूरि	शीतलनाथ की प्रतिमा का लेख	जिनदत्तसूरि की दादावाड़ी, शत्रुञ्जय	शत्रुञ्जय वैभव लेखांक २५८
४४.	१५५९	आषाढ़ सुदि १० बुधवार	"	अजितनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, सांगानेर	विनयसागर, प्रतिष्ठा लेख संग्रह लेखांक ९०१
४५.	१५६६	माघ वदि २ रविवार	'	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	वीर जिनालय, बडोदरा	मुनि बुद्धिसागर, पूर्वोक्त, भाग-२, लेखांक ४४
४६.	१५७५	आषाढ़ वदि ७ रविवार	महेश्वरसूरि	कुन्थुनाथ की प्रतिमा का लेख	महावीर जिनालय, मेड़तासिटी	विनयसागर, पूर्वोक्त लेखांक ९५६
४७.	१५८३	फाल्गुन वदि १ शुक्रवार	"	पार्श्वनाथ की प्रतिमा का लेख	विमलनाथ जिनालय, सवाई माधोपुर	वही, लेखांक ९७३
४८.	१५९३	आषाढ़ सुदि ३ रविवार	"	पद्मप्रभ की प्रतिमा का लेख	वासुपूज्य जिनालय, बीकानेर	नाहटा, पूर्वोक्त, लेखांक १३९५
४९.	१६२४	आषाढ वदि ८	आमदेवसूरि	श्रेयांसनाथ की प्रतिमा का लेख	पार्श्वनाथ जिनालय, कोचरों में, बीकानेर	वही, लेखांक १६२७
५०.	१६६७	भाद्रपद सुदि ९ शुक्रवार	यशोदेवसूरि के समय, सुमतिशेखर (शिलालेख के रचनाकार)	शिलापट्टप्रशस्ति	—	श्री नाकोड़ा तीर्थ, लेखांक ९०
५१.	१६७८	द्वितीय आषाढ सुदि २ रविवार	यशोदेवसूरि के समय उपा. कनकशेखर	शिलापट्टप्रशस्ति (चौकी मंडप में)	पार्श्वनाथ जिनालय, नाकोड़ा	वही, लेखांक ९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

			के शिष्य सुमति शेखर एवं देवशेखर (शिलालेख के रचनाकार)			
५२.	१६७९	माघ सुदि ४ शनिवार	श्री ...शेखरसूरि	शांतिनाथ की प्रतिमा का लेख	भंडारस्थ प्रतिमा, शांतिनाथ जिनालय, नाकोडा	वही, लेखांक ९२
५२.	१६८१	चैत्र वदि ५ मंगलवार	यशोदेवसूरि के समय हरशेखर के शिष्य कनकशेखर के शिष्य देवशेखर एवं सुमतिशेखर (शिलालेख के रचनाकार)	शिलालेख नाकोड़ा	रंगमंडप, पार्श्वनाथ जिनालय नाकोड़ा	वही, लेखांक ९५
५३.	१६८१	आषाढ वदि ६ सोमवार	—	शिलालेख	नाभिमंडप, पार्श्वनाथ जिनालय, नाकोड़ा तीर्थ	वही, लेखांक ९७
५४.	१६८१	फाल्गुन सुदि १० बुधवार	—	वासुपूज्य की प्रतिमा का लेख	पंचतीर्थी मंदिर, नाकोड़ा	वही,लेखांक ९६

उक्त अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर इस गच्छ के आचार्यों का जो पट्टक्रम निश्चित होता है, वह इस प्रकार है--

?

महेश्वरसूरि (प्रथम) (वि.सं. १३४५-१३६१)

।

अभयदेवसूरि (वि.सं. १३८३-१४०९)

।

आमसूरि (वि.सं. १४३५)

।

शांतिसूरि (वि.सं. १४५३-१४५८)

।

यशोदेवसूरि (वि.सं. १४७६-१५१३)

।

नन्नसूरि (वि.सं. १५२८-१५३०)

।

उद्योतनसूरि (वि.सं. १५३३-१५६६)

।

।

महेश्वरसूरि (द्वितीय) (वि.सं. १५७५-१५९३)

।

अभयदेवसूरि (कोई लेख उपलब्ध नहीं)

।

आमसूरि (वि.सं. १६२४)

।

शांतिसूरि (कोई लेख उपलब्ध नहीं)

।

यशोदेवसूरि (वि.सं. १६६७-१६८१)

अभिलेखीय साक्ष्यों में उल्लिखित महेश्वरसूरि 'प्रथम' (वि.सं. १३४५-१३६१) और **कालकाचार्य कथा** (वि.सं. १३६५/ई. स. १३०९ की उपलब्ध प्रति) के रचनाकार महेश्वरसूरि को समसामयिकता, नामसाम्य आदि को दृष्टिगत रखते हुए एक ही व्यक्ति माना जा सकता है। ठीक यही बात अभिलेखीय साक्ष्यों से ज्ञात नन्नसूरि (वि.सं. १५२८-१५३०) और सीमंधर जिनस्तवन (रचनाकाल वि.सं. १५४४/ई. सन् १४८८) के कर्ता नन्नसूरि के बारे में भी कही जा सकती है। इसी प्रकार वि.सं. १५७३/ई. स. १५२४ में विचारसारप्रकरण के रचनाकार महेश्वरसूरि और वि.सं. १५७५-१५९३ के मध्य विभिन्न जिनप्रतिमाओं के प्रतिष्ठापक महेश्वरसूरि द्वितीय भी एक ही व्यक्ति मालूम पड़ते हैं। जैसा कि पीछे हम देख चुके हैं, अजितदेवसूरि ने भी अपनी कृतियों में स्वयं को महेश्वरसूरि का शिष्य बताया है, जिन्हें महेश्वरसूरि द्वितीय से अभिन्न माना जा सकता है।

उक्त साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों के आधार पर **पल्लीवालगच्छीय** मुनिजनों की गुरु-परंपरा की जो तालिका बनती है, वह इस प्रकार है--

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महेश्वरसूरि — प्रथम (वि.सं. 1345-1361) प्रतिमा लेख
। — **कालकाचार्यकथा** के रचनाकार
।
अभयदेवसूरि (वि.सं. 1383-1409) प्रतिमा लेख
। — (कालकाचार्य कथा की वि.सं. 1365/ई. स. 1309
। — में लिखी गई प्रति वि.सं. 1378/ई. स. 1322
। — में इन्हें समर्पित की गई)
।
आमसूरि (वि.सं. 1435) प्रतिमालेख
।
शांतिसूरि (वि.सं. 1453-1458) प्रतिमालेख
।
यशोदेवसूरि (वि.सं. 1476-1513) प्रतिमालेख
।
नन्नसूरि (वि.सं. 1528-1530) प्रतिमालेख
। (वि.सं. 1544 में सीमंधर जिनस्तवन के रचनाकार)
।
उद्योतनसूरि (वि.सं. 1533-1556) प्रतिमालेख
।
महेश्वरसूरि (वि.सं. 1575-1593) प्रतिमालेख
। (वि.सं. 1573 में विचारसारप्रकरण के रचनाकार)
। ।
अजितदेवसूरि (पिंडविशुद्धिदीपिका, कल्पसिद्धान्तदीपिका आदि के कर्ता) — अभयदेवसूरि (साक्ष्य अनुपलब्ध)
। ।
हीराचंद (चौबोलीचौपाई के कर्ता) — आमसूरि (वि.सं. 1624) प्रतिमालेख
।
शांतिसूरि (साक्ष्य अनुपलब्ध)
।
यशोदेवसूरि (वि.सं. 1667-1681) प्रतिमालेख

जहाँ तक पल्लीवाल गच्छ की उक्त दोनों पट्टावलियों के विवरणों की प्रामाणिकता का प्रश्न है, उसमें प्रथम पट्टावली का यह कथन कि महेश्वरसूरि की शिष्यसंतति पल्लीवालगच्छीय कहलाई, सत्य के निकट प्रतीत होता है। चूँकि इस पट्टावली के अनुसार वि.सं. ११४५ में उनका निधन हुआ, अतः यह निश्चित है कि उक्त तिथि के पूर्व ही यह गच्छ अस्तित्व में आ चुका था। यद्यपि इस पट्टावली में उल्लिखित अनेक बातों का किन्हीं भी अन्य साक्ष्यों से समर्थन नहीं होता, अतः उन्हें स्वीकार कर पाना कठिन है, फिर भी इसमें पल्लीवालगच्छ के उत्पत्ति संबंधी साक्ष्य उपलब्ध होने के कारण इसे महत्त्वपूर्ण माना जा सकता है।

जहां तक दूसरी पट्टावली की प्रामाणिकता की बात है, इसमें यशोदेव-- नन्नसूरि-- उद्योतनसूरि-- महेश्वरसूरि-- अभयदेवसूरि-- आमसूरि-- शांतिसूरि-- इन पट्टधर आचार्योंके नामों की पुनरावृत्ति दर्शाई गई है। जैसा कि हम पीछे देख चुके हैं, साहित्यिक और अभिलेखीय साक्ष्यों से इसका समर्थन होता है। इस प्रकार इस पट्टावली में दिए गए पट्टधर आचार्यों के नाम और उनके पट्टक्रम की प्रामाणिकता प्रायः सिद्ध हो जाती है, किन्तु इसमें ५७वें पट्टधर आमसूरि, ५८वें पट्टधर शांतिसूरि और ५९वें पट्टधर यशोदेवसूरि से संबद्ध तिथियों को छोड़कर प्रायः सभी तिथियां मात्र अनुमान के आधार पर कल्पित होने के कारण अभिलेखीय या अन्य साहित्यिक साक्ष्यों से उनका समर्थन नहीं होता तथापि पल्लीवाल गच्छ से संबद्ध आचार्यों का प्रामाणिक पट्टक्रम प्रस्तुत करने के कारण इसकी महत्ता निर्विवाद है। इस पट्टावली में ४१वें पट्टधर महेश्वरसूरि का निधन वि.सं. ११५० में बतलाया गया है। प्रथम पट्टावली में भी वि.सं. ११४५ में महेश्वरसूरि के निधन की बात कही गई है और उन्हें पल्लीवालगच्छ का प्रवर्तक बताया गया है। दोनों पट्टावलियों द्वारा महेश्वरसूरि को समसामयिक सिद्ध करने से यह अनुमान ठीक लगता है कि महेश्वरसूरि इस गच्छ के प्रतिष्ठापक रहे होंगे।

मुनि कांतिसागर के अनुसार प्रद्योतनसूरि के शिष्य इन्द्रदेव से विक्रम संवत् की १२वीं शती में यह गच्छ अस्तित्व में आया, किन्तु उनके इस कथन का आधार क्या है, ज्ञात नहीं होता।

उपकेशगच्छ से निष्पन्न कोरंटगच्छ में हर तीसरे आचार्य का नाम नन्नसूरि मिलता है, इससे यह संभावना व्यक्त की जा सकती है कि पल्लीवालगच्छ भी उक्त गच्छों में से किसी एक गच्छ से उद्भूत हुआ होगा। इस गच्छ से संबद्ध १६वीं शती की ग्रन्थ-प्रशस्तियों में इसे कोटिकगण और चंद्रकुल से निष्पन्न बताया गया है, परंतु इस गच्छ में पट्टधर आचार्यों के नामों की पुनरावृत्ति को देखते हुए इसे चैत्यवासी गच्छ मानना उचित प्रतीत होता है। वस्तुतः यह गच्छ सुविहितमर्गीय था या चैत्यवासी, इसके आदिम आचार्य कौन थे, यह कब और क्यों अस्तित्व में आया साक्ष्यों के अभाव में ये सभी प्रश्न अभी अनुत्तरित ही रह जाते हैं।

सन्दर्भ

१. मुनि जिनविजय, संपा. विविधगच्छीयपट्टावली संग्रह , सिंघी जैन ग्रंथमाला, ग्रन्थांक ५३, मुंबई १९६१ ई.स., पृष्ठ ७२-७६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२. श्री अगरचंद्र नाहटा, पल्लीवालगच्छपट्टावली

श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई, संपा. श्री आत्मारामजी शताब्दी ग्रंथ , मुंबई १९३६ ई. स. हिन्दी खण्ड पृष्ठ १८२-१९६.

उक्त दोनों पट्टावलियां श्री मोहनलाल दलीचंद देसाई ने स्वसंपादित जैनगुर्जरकविओं भाग-३, खंड-२, पृष्ठ २२४४-२२५४ में भी प्रकाशित की हैं।

३. Muni Punyavijaya, Ed. Catalogue of Palm Leaf Mss in the Shate Natha jaina Bhandara, Cambay, Vd; G.O.S, No. 135, Baroda, 1961, A.D., PP. 81-82

४-५. श्री अगरचंद नाहटा, पल्लीवालगच्छपट्टावली, श्री आत्मारामजी शताब्दी ग्रंथ, पृष्ठ १९१

६. A.P.Shah, Ed. Catalague of Sanskrit & Prakrit Mss. Munu Shree punya Vijayji's callectin,vol-I, I.d. series No. 5, Ahmadabad, 1965, A.D. P-189, N0. 3343.

७. श्री आत्माराम शताब्दी ग्रंथ, पृष्ठ १९१-१९२

८. वही, पृष्ठ १९२

९. वही, पृष्ठ १९४-१९५

१०.-११. वही, पृष्ठ १९२

१२. मुनि कांतिसागर, शत्रुंजय वैभव, कुशल पुष्प ४, कुशल संस्थान, जयपुर १९९० ई., पृष्ठ ३७२.

१३. शिवप्रसाद कोरंटगच्छ का इतिहास, श्रमण, वर्ष ४०, अंक ५, पृष्ठ १५ और आगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org